

आंतरिक मूल्यांकन पद्धति और व्यक्तित्व विकास

भारतीय उपागम मे विद्या का महत्व है जो विद्यार्थी को सभी प्रकार से विकसीत कर सके विशेषकर उसेकी चेतन रूप को। प्राचीन शिक्षा में गुरु शिष्य परम्परा, शारीरीक, कला सृजनात्मक कार्य गुरु के वैयक्तिक निर्देशन द्वारा विद्यार्थी का शुद्ध शक्तिशाली चरित्र निर्माण किया जाता है। मानसिक अनुभव ही उसका सम्पूर्ण तत्व भण्डार है चुंकि व्यक्ति का आंतरिक संबंध अपने आस पास के सभी जीवो से रहता है अतः वह अपना अध्ययन करना ही किसी समय विशेष में अन्य के मन की घटनाओ सें तालमेल बना सकता हो इसलिए भारतीय संस्कृति शांत,सुलझे,परिपक्व व विकसित मन का द्योतक है और इसी शांती की अवस्था में ही व्यक्ति अधिक कार्य कर सकता है अतः भारतीय विचाराधारा बौद्धिक आंदोलन का पुनरोज्जीवन है। मन द्वारा ही समाज में सामंजस्य प्रेम, भाई— चारा, सहसम्बध, सुदृढ व अच्छे प्रकार से स्थापित होते है। परिवार में मधुर संबंध बनाये रखने के लिए स्वामी सत्यानंद सरस्वती जी ने निम्न प्रकार की आवष्यकताओं का वर्णन किया है।

1. सुख (भूख, प्यास, काम, नीद आदि)
2. सुरक्षा (स्थिरता, मकान, नौकरी, धंधा कपडे)
3. शांति (आनंद आदि)
4. प्रेम (प्यार, उत्साह, प्रशंसा, प्रसंन्ता)
5. आध्यात्मिकता (ईश्वर तत्व में लीन)

जब ये आवश्यकतायें संतुलित अवस्था में रहती है तो व्यक्ति के सभी मन की अवस्थाएँ जैसे काम,कोध, मंद, ईष्या, मोह, मत्सर्य, और घृष्णा आदि नियंत्रित रहती है। जिससे व्यक्ति का दूड, इगो, सुपर इगो संतुलित अवस्था में रहता है और व्यक्ति पूर्णता अर्थात आत्मसिद्धी को प्राप्त करता है। स्वामी जी का कथन है कि आत्मसिद्धी को प्राप्त करने में सहायक 11 मानसिक तत्व तो योगाम्यास से जागृप्त होते है ये निम्न मानसिक तत्व है।

1. तर्कशक्ति
2. रचनात्मक कौशल
3. बुद्धि या सम्प्रत्य
4. स्मरण शक्ति
5. एकाग्रता
6. क्रिया शीलता
7. चिता या तनाव में साम्जस्य
8. निराशा या कुटा का प्रबंधन
9. कार्यक्षमता में वृद्धि
10. हीनता ग्रंथी का विश्लेशण करने की क्षमता

11. तीव्र गति से बौद्धिक विकास

जब ये यौगिक अभ्यास के माध्यम से शरीर में प्रकट होते हैं तो व्यक्ति अपने परिस्थितिजन्य व्यवहार को नियंत्रित करना सीख लेते हैं और अपने मूलस्वरूप को जागृत कर लेता है ये मूल स्वभाव (सुख, शांति, प्रेम, क्षमा, त्याग) है जिससे व्यक्ति परमानंद की स्थिति में बना रहता है चूंकि इस स्थिति में व्यक्ति का स्वविवेक जागृत हो जाता है जिसमें वह सही निर्णय लेने में सक्षम हो जाता है और सभी प्रकार के नशा से मुक्त हो जाता है स्वामी निरंजनानंद सरस्वती जी ने किशोरवय के विद्यार्थी को दिव्य जीवन जीने की के लिए 9 सूत्रीय कार्यक्रम का उल्लेख किया

- | | | |
|--------------|----------|-------------|
| 1. स्वास्थ्य | 2. शांति | 3. सामंजस्य |
| 4. सेवा | 5. प्रेम | 6. दान |
| 7. साधु | 8. समाज | 9. संस्कृति |

इस प्रकार के जीवन जीने व्यक्ति अपराध आत्महत्या, अवसाद, तनाव, आदि से मुक्ति को प्राप्त करता है परिवार व समाज में भाईचारा व सहिष्णुता के साथ जीवन व्यतीत करता है जिससे राष्ट्रीयता की भावना सही समय में जन्म लेती है वहीं व्यक्ति दिव्यता के जीवन में आगे बढ़ता है और ईश्वर में लीन हो जाता है।

यदि हम वर्तमान मनोवैज्ञानिक समस्याओं के बारे में बातें करते हैं तो ये समस्याएँ व्यवहारवादी हैं जो कि पश्चिम देशों से हमारे यहां आई हैं। ये विशेषताएँ निम्न हैं।

1. भौतिक वस्तुगत्तता अधिक है।
 2. सत्य भैतिक वस्तुओं के प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न होती है।
 3. पश्चिमी विचाराधारा में चरित्र या व्यक्तिगुण सांस्कृतिक हैं।
 4. पर्यावरण को ही व्यक्ति व्यवहारक मानता है जैसा पर्यावरण होगा वैसा ही व्यक्ति बनेगा।
 5. तार्किकता है।
 6. अहंवादी अधिक होते गए उनमें घृष्णा, लालच व भ्रम उत्पन्न होते गया।
 7. प्रकृति का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा तथ्य एकत्रित करके किया जाता है।
 8. मनुष्य कारणवाद पर निर्भर करता है।
 9. मस्तिष्क के बाह्य क्रिया द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान रहा उसी से वे सामान्यीकरण करते रहे।
 10. पश्चिमी मनो. मनुष्य के गुणों पर बल देता है इस कारण वह अंतवैयक्तिक संबंध उचित स्थापित करने पर बल दे देता
- जबकि भारतीय आत्मज्ञान को मानते हैं जो वैयक्तिक होता है हम मनुष्य की आंतरिक शक्ति पर अधिक बल देते हैं।

हमारे यहां आत्मनिरीक्षण अंतर्दर्शन भौतिक जगत व मानसिक जगत के समन्वय में सच्चाई का वर्णन रहता है। हमारे यहां संसार का आदि व अंत नहीं है हम वैयक्तिक अचेतन, चेतन, चरित्र को मानते हैं चरित्र व्यक्ति स्वयं का होता है और गुण व्यक्ति के स्वयं के होते हैं। भारतीय मनो. यह कहता है कि व्यक्ति को पर्यावरण निर्माणक कहा जाता है अर्थात् व्यक्ति ही कर्ता है जैसा कर्म करेगा वैसा ही भोग भोगेगा। भारतीय मनो. व्यक्तिवादी होने के कारण उसमें समान्यीकरण संभव नहीं हो पाता अतः वह अभी तक तर्क का प्रयोग नहीं कर पाया सभी मनुष्यों की अध्यात्मिकता को मानते हुए वह व्यक्ति विशेष के अनुभवों के वर्णन को भी मानता । भारत के लोग अहंकारी कम परन्तु आत्मसम्मानि है। भारत केवल ध्यान केन्द्रण विधी अपनाता रहा। वह मस्तिष्क की आंतरिक क्रिया द्वारा तथ्य एकत्रित करता है भारत कारणवाद की अपेक्षा आदिशक्ति` मिलन या योग द्वारा कार्य करता है यहां का चिंतन व्यक्ति को अविभाज्य मानता है। अतः सभी व्यक्ति एक समान होते हैं। सभी व्यक्ति में एकसा संबंध स्थापित हो जाता है।

महर्षियों का यह भी कहना है कि हमारे पास अचूक यंत्र हमारे प्राचीन ग्रंथ , हमारा मूल स्वभाव (सुख , शांति , प्रेम , क्षमा , त्याग) का अम्यता , हमारी प्राचीन सम्यता रामायण गीता (अर्थ धर्म , काम , मोक्ष) का संसारिक भाव व हमारा स्वविवेक जो हमें सम्पूर्ण बनाता है। जिससे हम हमारे काम , क्रोध , मद लोभ , ईश्या, डाह पर विनय प्राप्त कर हम अपनी परिस्थितिजन्य घटना का नियंत्रित कर हम अपने पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाते हुए दिव्य जीवन के पथ पर आगे बढ़कर ईश्वर में लीन हो जाते हैं ।

इसलिए भारतीय ईश्वर मनो. अपनी उच्च अध्यात्मिक अवश्यकता व अतिचेतना को विकसीत कर व्यक्ति में राष्ट्रीयता का भाव संसारिक सुख प्राप्त करने की कला सिखान व सर्वांग पूर्ण व्यक्तित्व को प्राप्त कर सृष्टि में दिव्यता का प्रसार करने में सक्षम है।

भारती संस्कृति को जीवित रखने के लिए हमें हमारी शिक्षा पद्धति में 3 चीजों को प्रमुखता से रखना होगा और उसको प्राप्त करने के लिए अग्रसर होना होगा जो निम्न है –

- 1 उच्च अध्यात्मिकता की आवश्यकता
- 2 राष्ट्रीयता का भाव
- 3 पारिवारिक व संसारिक सुख
4. संसारिक सुख प्राप्त करने के लिए हमारी शिक्षा नीती में Skill devlopment व व्यवसायगत इंस्टीट्यूट जहां Vecancey निरंतर निकलती रहे ताकि विद्यार्थी कालेज व स्कूल पूरा करके तुरंत अपनी मूल अवश्यकताओं को पूर्ण कर सकें ।
5. अपनी जरूरत पूर्ण करने वाला व्यक्ति महत्वंकाक्षी भी होता है वह दूसरों से आगे बढ़ना चाहता है इसलिए व्यवसायी संस्थाओं में पर्याप्त विकास की राह होना चाहिए ।

काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, डाह आदि के चलते जहां व्यक्ति के रिश्तो को निभाना कठिन हो जाता है और वह व्यक्ति अकेला पारिवारिक वजन ढोते ढोते थक जाता है तब उसे समाज और परिवार की याद आती है और वह परोपकारिता व सहायता के गुणों का सहारा लेता है तब तभी उसमें समाजीकरण का भाव जागृत होता है।

जब व्यक्ति परिवार व समाज के उत्तदायित्व को सम्हालने लगता है तो वह अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम को स्वीकार्य करता है और अपने राष्ट्र के लिए मरने व जीने के लिए तैयार हो जाता है।

अपरिपक्वता से परिपक्वता की ओर जाते समय कई बार हम चिंता, तनाव अंतर्द्वंद, अवसाद कुंठा व निराशा के दौर से गुजरते हैं जहां हमें ईश्वर को याद करना जरूरी हो जाता है और हमें अपने व्यक्तित्व को खंड से सम्पूर्ण बनाने में हमारी उच्च चेतना मदद करती है। इस उच्च चेतना को हम निम्न अभ्यास के दौरान प्राप्त कर सकते हैं।

- 1 रक्त चाप का संतुलन
- 2 पल्स दर में सुधार
- 3 रक्त संचरण में नियमितता
- 4 श्वसन क्रिया में नियंत्रण
- 5 कम हृदय गति तथा शरीर के लिए बेहतर आक्सीजनेशन
- 6 विभिन्न अंगों की मालिश
- 7 गेस्ट्राइंटेस्टाइनल कार्यों में सुधार
- 8 प्रतिरक्षा प्रणाली में दृढता
- 9 शरीर के विभिन्न अंगों के दर्द में नियंत्रण
- 10 चयापचय में नियमितता
- 11 वृद्धावस्था की विषहरण प्रक्रिया में तेजी
- 12 आसनो से विभिन्न अंगों में सुदृढता
- 13 ताकत शरीर के विभिन्न अंगों में
- 14 उर्जा का संचार
- 15 वजन का नियंत्रण
- 16 योगनिद्रा के द्वारा शरीर को उर्जा की प्राप्ति
- 17 शरीर के विभिन्न अवयवों का संतुलन
- 18 शरीर का एकीकृत कार्य संचालन
- 19 शारीरिक जागरूकता
- 20 शरीर के विभिन्न मुद्राओं को सहजता
- 21 कामुकता पर नियंत्रण
- 22 मूद्र या मनोदशा पर नियंत्रण
- 23 विभिन्न प्रकार के तनावों में कमी
- 24 चिंता की समाप्ति
- 25 अवसाद में कमी

- 26 आत्म स्वीकृति
- 27 मन और शरीर के संबंधो का एकीकरण
- 28 जीवन ते सकारात्मक दृष्टिकोणो का विकास
- 29 शत्रुता की मनःदशा पर नियंत्रण
- 30 एकाग्रता का विकास
- 31 स्मृति की तीव्रता
- 32 ध्यान केन्द्रीत करने में सुगमता
- 34 सामाजिक कौशल का उन्नयन
- 35 मन की शांति
- 36 कोलेस्टाल कम करना
- 37 ग्लूकोज को कम करना
- 38 सोडियम के स्तर को नियंत्रित करना
- 39 अंतःस्त्रावी कार्यो का सुचारु रूप से संचालन करना
- 40 हृदय रोगो तथा रक्त चाप पर नियंत्रण
- 41 लाल रक्त कणो में वृद्धि करना
- 42 विटामिन सी प्रतिरक्षा प्रणाली में सहयोगी
- 43 चोट लगने का खतरा कम करना
- 44 पैरोसेम्पथैटिक नर्वस सिस्टम को नियंत्रित करना
- 45 मांस पेशियो में दृढता लाना
- 46 मस्तिष्क के उपकट्रेम्स पर प्रभावी असर डालना
- 47 आक्सीजन की खपत में कमी करना
- 48 सांस लेने की क्रिया को नियंत्रित करना
- 49 विरोधी मांसपेशियो की एक साथ कसरत करना

52 प्रतिस्पर्धाओ पर नियंत्रण करना इस प्रकार इंद्रायोग चिकित्सा पद्धति के द्वारा शरीर के सारे अंग पुष्ट होते है मन का विकास होता है और विभिन्न रोगो पर नियंत्रण भी प्राप्त किया जाता है।

यह समग्र व्यक्तित्व को धारित करने वाली पद्धति का उद्देश्य है। भगवत चेतना का पृथ्वी पर प्रसार करना। श्री अरंविद का यह मत है कि चेतना के निम्न स्तर पर व्यक्ति अपने को सीमित तथा अशांत पाता है लेकिन चेतना के उस उच्च स्तर जो कि वास्तव में भगवत चेतना है व्यक्ति अपने विचाट स्वरूप से भली भांति परिचित होता है।

पूर्ण योग की साधना के संदर्भ में श्री अरविद ने लिखा है—

दो शक्तियां है जिनके संयोग से ही वह महान और कठिन कार्य पूरा हो सकता है जो हमारी साधन का लक्ष्य है एक है दृढ और अटूट अभ्यास जो नीचे से पुकारती है और इससे ही जो ऊपर से उसका उत्तर देती है। किंतु परम भगवत्कृपा केवल प्रकाश और सत्य की स्थितियो में ही

कार्य करेगी असत्य और अज्ञान द्वारा लादी हुई स्थितियों में नहीं क्योंकि यदि असत्य की मांगों के सामने झुक जाए तो अपने उद्देश्य को ही विफल कर देगी।

यदि हमें उच्च चेतना को विकसित करना है तो हमें निम्न चेतना जो हमें कालेज व स्कूल में पढाये पाठ्यक्रमों गये पाठकों से प्राप्त होता है उसे विद्यार्थी जीवन में सफलतापूर्वक उतारना चाहिए इसके लिए पूरी शिक्षा पद्धति व शिक्षा विभाग को जिम्मेदार होता है। इसलिए NEP 2024 में इन बातों को भी जोड़ना चाहिए।

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और जीवन मूल्यों की सुनिश्चितता मनोवैज्ञानिक ग्रेवाल ने व्यक्ति के सम्यक् विकास के लिए निम्न 5 क्षेत्रों में मार्गदर्शन की आवश्यकता प्रतिपादित की हो –जिससे व्यक्ति संसारिक सुखों की प्राप्ति करता है

- 1 शारीरिक आवश्यकताएं
- 2 सामाजिक आवश्यकताएं
- 3 मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं
- 4 शैक्षिक आवश्यकताएं
- 5 व्यवसायिक आवश्यकताएं

ये पांच जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं हैं जिनके संदर्भ में पाठ्यक्रम में मार्गदर्शन दिया जाना आवश्यक है इनके बिना शिक्षा की सारी उततम व्यवस्था भी आधी अधूरी रह जाएगी। इसी तरह प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मैसलो ने प्राथमिक क्रम से निम्न जीवन मूल्यों का ज्ञान विद्यार्थियों को ही नहीं हर व्यक्ति को आवश्यक प्रतिपादित किया है अतः किसी न किसी रूप में पाठ्यक्रमों में इनका भी समावेश किया जाना आवश्यक है।

- 1 मनोसमाजिक मूल्य
- 2 सुरजात्मक मूल्य
- 3 अपनत्व की भावना तथा प्रेमपरम मूल्य
- 4 आत्मसम्मान परक मूल्य
- 5 सौन्दर्यपरक
- 6 आत्मज्ञान परक मूल्य

इस प्रकार की वास्तविक आवश्यकताओं तथा मूल्यों के पाठ्यक्रमों में समावेश से विद्यार्थियों को मनो शारीरिक तनावों से मुक्ति भी मिलेगी तथा उनमें स्वाम्बन के भाव विकसित हो सकेंगे। उनका पाठ्यक्रम समग्र, व्यापक गंभीर होगा जिस के अध्ययन से उनके जीवन में सुरक्षा परक तथा आत्मसम्मान के भाव भी जागृत होंगे और वस्तुपरक लघुउत्तरीय सेमेस्टर एवं सत्त तथा आंतरित मल्यांकन से उनका वैज्ञानिक ढंग से मूल्यांकन भी हो सकेगा।

आज के युग में के.जी. वन से ही पढ़ने के क्षेत्र में अत्यंत कठिन प्रतिस्पर्धा ही गई है एक एक नंबर से बच्चों की पोजिशन बन बिगड रही है यदि बच्चा 99.99% अंक लाता है तब भी उसके माता पिता को ऐसा लगता है कि जैसे उसका बच्चा स्कूल में पिछड रहा है क्योंकि पहले नंबर पर तो दूसरे दस लडके आ रहे हैं जिनके शत प्रतिशत अंक है माता पिता का यह दृष्टिकोण बच्चों के जीवन में अनावश्यक तनाव को जन्म दे रहा है। बच्चों को यह पढ़न पाढ़न भी उनके जीवन को उनके जीवन को असंतुलित कर रहा है और उन्हें खेलने का समय भी नहीं दे रहा है माता पिता चाहते हैं कि वे जब भी देखें तो उन्हें उनके बच्चे पढ़ते ही नजर आयें उनका यह दृष्टिकोण भी बच्चों के व्यक्तित्व को असंतुलित कर रहा है खेलने से बच्चों के सारे शरीर में रक्त का संचार तेजी से होता है जिससे आक्सीजन की खपत अधिक होती है और उनके शरीर मन और प्राणो अधिक और ऊर्जा मिलती है वे ताजगी का अनुभव करते हैं उनकी स्मृति तेज होती है उनके चेहरे पर ओज और तेज का प्रकाश फैलते हैं जिनसे शरीर के में सारे अवयव पुष्ट होते हैं पर अतिशयत हर क्षेत्र में वर्जित हीती है जीवन का निर्माण संतुलित ढंग से ही होना चाहिए तभी बच्चों के व्यक्तित्व विकास में भीसंतुलन बना रहता है और वे विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओ से दूर रहते हैं। हर माता पिता यही चाहता है कि उसका बच्चा हर काम तेजी से करे और कक्षा में प्रथम आयें पर हर बच्चा अपनी कक्षा में प्रथम नहीं आ सकता । बुद्धि एक जन्म जात कारण है इसे बदला नहीं जा सकता पर बच्चे को उपयुक्त वातावरण प्रदान कर उसके सीखने की गति को बढ़ाया ता सकता है यहां उपयुक्त वातावरण का अर्थ बच्चे के माता पिता उसके साथी, मित्र, सहपाठी, मित्र शिक्षकगण आदि से है। मनोवैज्ञानिक शोधो में यह देखा जा सकता है कि उच्च सृजनात्मकता वाले बच्चे की बुद्धि लब्धि अधिकतम 127 होती है और प्रखर बुद्धि वाले बच्चे की अधिकतम बुद्धि लब्धि 150 तक पाई जाती है अक्सर यह देखा गया है कि उच्च सृजनात्मकता वाले बालक या बालिक की बुद्धि लब्धि कम होती है और जिनका बौद्धिक स्तर उच्च होता है उनकी सृजनशक्ति कम होती है इन दोनो का साथ-साथ अधिकतम बाह्यकारको पर निर्भर करता है यदि बच्चे में सृजनात्मकता के गुण अधिक या कम है तो उनके और अधिक विकास के लिए माता पिता को निम्न बातो पर ध्यान देना चाहिए—

- 1 बच्चों में धनात्मक सामाजिक अभिवृत्तिया ही विकसित हो दस बात का ध्यान रखा जायें यदि ऋणत्मक सामाजिक वृत्तियों विकसित हो रही है तो ऐसे बच्चों के अपने साथियो, संरक्षण और अध्यापक से संबंध बिगड जाते हैं फलतः उनकी सृजन शक्ति के विकास में अवरोध उत्पन्न हो जाता है।
- 2 घर और बाहर भी बच्चों को अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने की वृत्ति को प्रोत्साहित किया जाये।
- 3 घर परिवार में अत्यधिक अनुशासन के बोझ से भी बच्चों की सृजन शक्ति मंद या कभी कभी समाप्त हो जाती है अतः उन्हें अपने मन से काम करने की पूर्ण स्वतंत्रता भी दी जानी चाहिए अन्यथा वे या तो दबू प्रकृति के अथवा उच्चछंखल हो जायेंगे।

- 4 माता पिता अथवा अभिभावको को अपने बच्चो को उनकी उम्र के अनुसार ऐसे खिलौने उपकरण आदि प्रदान करे ताकि उनकी सृजनशक्ति का विकास हो सके ।
- 5 विशेषज्ञो द्वारा प्रशिक्षण सफलता के लिए पुरस्कार प्रोत्साहन आदि भी बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहते है अतः ऐसे अवसर उन्हें मिलते रहना चाहिए ।

उपलब्धी अकांक्षाये दो प्रकार की होती है प्रथम तात्कालिन और द्वितीय दीर्घकालीन यदि उनकी उपलब्धि संबंधी आकांक्षाये धनात्मक होती है तो समाज के साथ उसका समायोजन उत्तम कोठी का होता है इस दशा में उनकी सीखने की क्षमता, बुद्धि,योग्यता, आदि सभी के स्तर में वद्धि होती है मनोवैज्ञानिको ने अपने शोधो में यह पाया कि उच्च योग्यता वाले छात्रो में जब अपने कार्य प्रति चिंता की मात्रा में वषद्धि होती है तो वक अपना कार्य तेजी से सम्पन्न करते है जबकि साधारण तथानिम्न बुद्धि के विद्यार्थी चिंता की स्थिती में काम या तो बंद कर देते है या उनकी कार्य करने की गति मंद पड जाती है कम बुद्धि वाले विद्यार्थी की रूचि खेल में है तो उन्हेखेल के माध्यम से ही शिक्षा देने कार्य किया जाता है तोउनकी पढने की गति मे तेजी आ सकते है। यदि उनके साथ जबरदस्ती की गई मार पीटकर उन्हे पढाने लिए बाध्य किया गया तो इन कार्यो का उनके व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पडेगा और निश्चित रूप से उसके मानसिक विकास की गति मंद पड जायेगी इन स्थितियो में उसके साथ प्लेइंग टीचिंग मेंथड का प्रयोग किया जाना चाहिए इस विधी में उन्हे पता ही नहीं चलती कि वे पढ रहे है और वे पढाई केकार्यो को सुरुचिपूर्वक करले लगते है। यदि बच्चा एक ही कक्षा में बार बार फेल हो रहा है तो उसके Increase in traits and change in Metheads change in Goal का प्रयोग किया जाना चाहिए यदि उसके मन में कुढा, निराशा, पलायन आदि की भावनाये विकसीत हो रही है तो Injeriorty complex Aggression behaviare and Mental Mechanism के अंतर्गत कल्पना तंरग या फेन्टेसी क्षतिपूर्ति तादात्मक प्रक्षेपण युक्तियुक्त तथा उन्नयन से काम लेना चाहिए। यह बात हम सब जानते है कि निराशा की स्थिति में व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती है ये सारी स्थितियां उसकी सृजनशक्ति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर देती है इनसे उसका बौद्धिक विकास भी मंद पड जाता है ये भावनाये उसकी सीखाने की गति को भी धीमा कर देती है। यदि समय रहते इन भावनाओ का निराकरण नहीं किया गया तो इनका प्रभाव उसके भावी जीवन और व्यक्तित्व निर्माण पर भी पडेगा और वह अनजाने ही अनेक विषमताओ और वह अनजाने ही अनेक विशमताओ से भर जायेगा। इस तरह माता पिता अपने बच्चो का मात्र पालन पोषण कर अपने दायित्व से मुक्त नहीं ही सकतें वे उनके भावी जीवन की सफलता व असलता के प्रति भी उत्तरदायित्व होते है एक शोध के अनुसार विद्यार्थियो के शारीरक तथा बौद्धिक विकास पर प्रदूषित जल का प्रभाव पडता है। जो कि उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता का प्रभावित करता है।

पश्चिम यूरोप तथा उत्तर अमेरिका के अधिकांश विश्वविद्यालयो में वर्तमान में जो मूल्यांकन पद्धति प्रचलित है वह है जो अध्यापक पढाता है वही अपने छात्रो का मुल्यांकन करे किंतु उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य परिपत्र में आंतरिक मूल्यांकन के साथ साथ बाह्य मूल्यांकन को भी आवश्यक माना गया है पर विश्वविद्यालयीन प्रश्न पत्रो का प्रारूप कैसा हो यह बात उसके विवेक पर छोड दी है।